गुरु स्तुति

मत्प्रेयान् राधिका प्रेयान् मद्धवो राधिका धवः ।
तस्मादपि गरीयान्यो कृपालुर्मे जगद्गुरुः ॥

मेरे प्रियतम वही हैं जो श्री राधा के प्रियतम हैं । मेरे स्वामी वही हैं जो श्री राधिकारानी के स्वामी हैं । किन्तु मेरे लिये तो उनसे भी अधिक महान् हैं मेरे गुरुजगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज ।

गुरुं भजति श्री कृष्णः, श्रीकृष्णं भजते गुरुः ।
सिद्धान्ततस्त्वभेदेऽपि, कृपालुर्मे गुरुर्महान् ॥

गुरुदेव श्रीकृष्ण को भजते हैं,और श्री कृष्ण गुरुदेव को । यद्यपि सिद्धान्त के दृष्टिकोण से हरि एवं गुरुमें अन्तर कोई नहीं है,तथापि मेरे लिये गुरु का अधिक माहात्म्य हैं, क्योंकि उन्हीं की कृपा से तो हमें श्री कृष्ण की प्राप्ति होगी ।

यस्य साक्षात् भगवति ज्ञानदीप प्रदे गुरौ ।
मर्त्या सद्धीः श्रुतं तस्य सर्वं कुञ्जर शौचवत् ॥

हृदय में ज्ञान का दीपक जलाने वाले गुरु साक्षात् भगवान् ही हैं । जो दुर्बुद्धि पुरुष उन्हेंमनुष्य समझता है, उसका समस्त शास्त्र श्रवण हाथी के स्नान के समान व्यर्थ है ।

एष वै भगवान् साक्षात् प्रधान पुरुषेश्वरः ।
योगेश्वरैर्विमृग्यांघ्रिर्लोकोऽयं मन्यते नरम् ॥

बड़े बड़े योगीश्वर जिनके चरण कमलों का अनुसन्धान करते रहते हैं,प्रकृति और पुरुष केअधीश्वर वे स्वयं भगवान् ही गुरुदेव के रूप में प्रकट हैं । मायाबद्ध जीव इन्हें भ्रमवश मनुष्य मानते हैं ।

श्री शंकराचार्य रचित श्रीकृष्ण स्तुति

यमुना निकट तटस्थित वृन्दावन कानने महारम्ये । कल्पद्रुमतलभूमौ चरणं चरणोपरिस्थाप्य ॥
तिष्ठंतं घननीलं स्वतेजसा भासयन्तमिह विश्वम् । पीताम्बरपरिधानं चन्दनकर्पूरलिप्तसर्वांगम् ॥

श्री यमुना जी के तट पर स्थित वृन्दावन की किसी अति मनोहर वाटिका में कल्पवृक्षके नीचे की भूमिपर चरण पर चरण रखे श्री कृष्ण बैठे हैं, जो नवीन बादलों के सदृश श्यामवर्ण के हैं, पीताम्बर पहने हुए हैं एवं सारे शरीर में कपूर से मिश्रित चन्दन का लेप किए हुए हैं ।

आकर्णपूर्णनेत्रं कुण्डलयुगमंडितश्रवणम् । मंदस्मितमुखकमलं सकौस्तुभोदारमणिहारम् ॥
वलयांगुलीयकाद्यानुज्वलयन्तं स्वलंकारान् । गलविलुलितवनमालं स्वतेजसापास्तकलिकालम् ॥

जिनके कर्ण पर्यन्त बड़े बड़े नेत्र हैं, कान में सुन्दर कुण्डल सुभोशित हैं, मुखारविन्द पर मन्द मन्द मुसकान शोभायमान् है ।वक्षस्थल पर कौस्तुभमणि युक्त सुंदर मालाएँ सुशोभित हो रही हैं । जो अपनी दिव्य कांति से कंकण, अँगूठी आदि आभूषणों कीकांति को दूनी कर रहे हैं, जिनके गले में वनमाला लटक रही है, जिन्होंने अपने तेज के प्रभावसे कलिकाल को नष्ट कर दिया है ।

गुंजारवालिकलितं गुंजापुंजान्विते शिरसि । भुंजानं सह गोपैः कुंजांतर्वर्तिनं नमत ॥
मन्दारपुष्पवासितमंदानिल सेवित परानन्दम् । मन्दाकिनीयुतपदं नमत महानन्ददं महापुरुषं ॥

जिनका गुंजावलि अलंकृत मस्तक गूँजते हुए भौरों से शोभायमान हो रहा है । किसी कुंज के भीतर बैठकर ग्वाल बालों के साथ भोजन करते हुए उन श्री कृष्ण का स्मरणकरो, जो कल्पवृक्ष के फूलों की सुगन्धि से युक्तमन्द मन्द वायु से सेवित हैं,जो स्वयंपरमानन्द स्वरूप हैं, जिनके चरणों में भगवती भागीरथी विराजमान हैं । उन परमानन्द दायक श्री कृष्ण का स्मरण करो ।

सुरभीकृतदिग्वलयं सुरभिशतैरावृतः परितः । सुरभीतिक्षपणमहासुरभीमं यादवं नमत ॥

जिन्होंने समस्त दिशाओं को सुगन्धित कर रखा है, जो सैंकड़ों कामधेनु से भी सुन्दर गायों से घिरे हुए हैं । जो देवताओं के भय को दूर करने वाले एवं भयानक राक्षसों को भी भयभीत करनेवाले हैं, उन यदुनन्दन का स्मरण करो ।